Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)
© VIJACT |Vol.2, Issue4, Apr. 2026, pp. 12-18 | ISSN: 3139-1656 (Online)
DOI: https://doi.org/10.65785/vijact.v2i4.32
Available online at: https://vijact.com/

समकालीन समाज में भारतीय संस्कृति की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ : एक समाजवैज्ञानिक विश्लेषण

डॉ. अनामिका सिंह

Article Info

Article history:
Received Apr 12, 2026
Accepted Apr 19, 2026
Published Apr 30, 2026

मुख्य शब्द:
भारतीय संस्कृति
सांस्कृतिक क्षरण
वैश्वीकरण
योग
आयुर्वेद
सॉफ्ट पावर

ABSTRACT

वर्तमान सदी में भारतीय संस्कृति वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण, डिजिटलीकरण, बाजारीकरण और शहरीकरण जैसी प्रभावशाली सामाजिक प्रक्रियाओं के बीच अपनी पहचान को सुरक्षित रखते हुए उसे नवीन परिस्थितियों में पुनर्निर्मित और पुनर्स्थापित करने हेतु निरंतर प्रयत्नशील है। प्रस्तुत शोध-पत्र का लक्ष्य वर्तमान परिस्थितियों में भारतीय संस्कृति के समक्ष खड़ी चुनौतियों जैसे कि पश्चिमीकरण के बढ़ते प्रभाव से उत्पन्न सांस्कृतिक विघटन, पारंपरिक भारतीय परिवार व्यवस्था का विघटन, उपभोक्तावाद का प्रसार, जाति-आधारित सामाजिक असमानता, धर्म आधारित साम्प्रदायिकता/वैमनसता की नवीन प्रवृत्ति और सांस्कृतिक विकृतियों आदि का समाजवैज्ञानिक दृष्टि से विस्तृत विश्लेषण करना है। प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय संस्कृति की संभावनाओं जैसे योग और आयुर्वेद की बढ़ती वैश्विक स्वीकृति, डिजिटल माध्यमों की बढ़ती उपयोगिता से सांस्कृतिक पुनर्जागरण, नीतिगत एवं संस्थागत हस्तक्षेप, सामाजिक पुनर्निर्माण में युवा पीढ़ी की बढ़ती भागीदारी और बहुसांस्कृतिक परंपरा की वैश्विक पहुँच आदि का विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण में क्रियात्मक सिद्धांत, संघर्ष सिद्धांत, प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद और आधुनिकरण सिद्धांत जैसे समाजवैज्ञानिक प्रावधानों का उपयोग किया गया है।

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.

Corresponding Author:
डॉ. अनामिका सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, कुँ. आर. सी. महिला महाविद्यालय, मैनपुरी।
Email: anasingh9026@gmail.com

1. प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण, डिजिटलीकरण, बाजारीकरण और शहरीकरण जैसी उत्तर आधुनिक सामाजिक-आर्थिक और तकनीकी प्रक्रियाओं के बीच अपनी पारंपरिक पहचान तथा नवीन प्रारूपों के साथ संतुलन स्थापित करने हेतु निरंतर प्रयत्नशील है (अप्पादुरई, 1996)। भारतीय संस्कृति अर्थात सनातन संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और बहुल सांस्कृतिक परंपराओं से आच्छादित मानी जाती है, जो वैदिक काल से चली आ रही है। जिसे वेदों, उपनिषदों, महाकाव्यों, संत परंपराओं ने धार्मिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक और नैतिक विविधता से समृद्ध बनाया है (सईद, 1978)। लेकिन वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव एवं उत्तर आधुनिक के दौर में नवीन सांस्कृतिक-आर्थिक परिस्थितियों के बीच यह सनातन संस्कृति नए प्रकार की चुनौतियों से जूझ रही है (अप्पादुरई, 1996)।

समाजशास्त्र में संस्कृति को 'सामाजिक मूल्यों, विश्वासों, प्रतीकों, भाषा, व्यवहार और जीवन-शैली का समुच्चय' माना जाता है (टायलर, 1871)। एमिल दुर्खाइम के अनुसार, संस्कृति सामाजिक एकता और स्थिरता का आधार है (दुर्खाइम, 2001), जबकि कार्ल मार्क्स इसे

वर्ग-संघर्ष और सामाजिक नियंत्रण का माध्यम मानते हैं (मार्क्स एवं एंगेल्स, 2002)। इसी संदर्भ में भारतीय सनातन संस्कृति, जो धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र आधारित बहुसांस्कृतिक समाज में मूल्य संहिता एवं परंपराओं के रूप में निरंतर कार्यशील है, वर्तमान में वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण और शहरीकरण के बढ़ते प्रभाव से बदलाव के दौर से गुज़र रही है। आज का यूथ पश्चिमी जीवनशैली, फास्ट-फूड, वेस्टर्न फैशन और मल्टीनेशनल ब्रांड की संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित दिखाई पड़ता है (रिट्ज़र, 1993)। तो वहीं पारंपरिक सामाजिक मूल्यों के कमजोर पड़ने से परंपरागत भारतीय संयुक्त परिवार व्यवस्था के टूटने एवं एकल परिवार का प्रादुर्भाव। शहरीकरण की तीव्र गति ने नवीन उपभोक्तावादी बाजार व्यवस्था को गति दी जिसके फलस्वरूप प्राचीन ग्रामीण सांस्कृतिक प्रणाली को उपभोक्तावाद में बदल दिया है। साथ ही, डिजिटल क्रांति ने सोशल मीडिया एवं अन्य इंटरनेट आधारित सूचना प्रोद्योगिकी के उपयोग ने भारतीय संस्कृति को नए अर्थों में प्रस्तुत करने एवं उसके व्यावसायिक उपभोग के नित नए आयामों को निर्मित किया है (कास्टेल्स, 2010)। इस प्रकार, वर्तमान भारतीय संस्कृति आज 'परंपरागत विरासत' के रूप में नहीं, बल्कि एक परिवर्तनशील वास्तविकता के रूप में उभर रही है। जिसमें प्राचीनता और आधुनिकता दोनों खुद को स्थापित रखने के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं।

2. साहित्य समीक्षा

भारतीय संस्कृति के अध्ययन में समाजशास्त्र, इतिहास एवं सांस्कृतिक अध्ययन के अनेक विद्वानों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एम.एन. श्रीनिवास ने 'संस्कृतीकरण' की अवधारणा के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि संस्कृति स्थिर नहीं बल्कि परिवर्तनशील एवं गतिशील होती है (श्रीनिवास, 1966)। इसी प्रकार राधाकमल मुखर्जी आदि विद्वानों ने भारतीय समाज की बहुआयामी संरचना (जाति, धर्म एवं ग्राम, शहर आदि) का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया (मुखर्जी, 1940)। वैश्वीकरण के संदर्भ में आधुनिक समाजशास्त्रियों जैसे एंथनी गिडेंस ने बताया कि 'समय-स्थान संक्षेपण' के कारण स्थानीय संस्कृतियाँ वैश्विक प्रभावों से जुड़ गई हैं (गिडेन्स, 1990)। इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय संस्कृति पर पश्चिमी जीवनशैली, उपभोक्तावाद एवं व्यक्तिवाद का प्रभाव बढ़ा है, जिससे पारंपरिक समाज व्यवस्था एवं पारिवारिक संरचनाएँ कमजोर पड़ी हैं। जिस कारण भारतीय विद्वानों ने इसे 'सांस्कृतिक साम्राज्यवाद' की संज्ञा दी है, जहाँ वैश्विक मीडिया एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार कर रही हैं (शिलर, 1976)। हाल के अध्ययनों में भारतीय संस्कृति का SWOT विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, जिसमें भारतीय संस्कृति की बहुलता, योग एवं आयुर्वेद जैसी विशेषताओं को ताकत माना गया है, जबकि सामाजिक असमानता, जातिगत विभेद एवं सांस्कृतिक विकृति को प्रमुख चुनौतियों के रूप में देखा गया है (माउंड, 2020)। निःसंदेह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर योग और आयुर्वेद की वैश्विक स्वीकृति ने भारत को एक 'सॉफ्ट पावर' के रूप में स्थापित किया है। उपरोक्त तथ्यों के अनुसार भारतीय संस्कृति के समक्ष सामाजिक, आर्थिक एवं डिजिटल असमानताएँ प्रमुख बाधाएँ हैं। फिर भी डिजिटल माध्यमों, सांस्कृतिक विविधता एवं पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के माध्यम से इसके पुनर्जागरण की व्यापक संभावनाएँ मौजूद हैं।

3. उद्देश्य

1. वर्तमान भारतीय समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण करना।
2. वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, बाजारीकरण और डिजिटलीकरण जैसी नवीन प्रक्रियाओं से उत्पन्न चुनौतियों की पहचान करना तथा उनके सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करना।
3. सामाजिक विभेदकों (जाति, लिंग, धर्म, वर्ग और क्षेत्रीयता आदि) के आधार पर सांस्कृतिक असमानताओं को समझना और उनके दीर्घ-कालिक प्रभावों का अध्ययन करना।
4. भारतीय संस्कृति की नवीन संभावनाओं जैसे योग, आयुर्वेद, ध्यान, भारतीय दर्शन, लोक-संस्कृति और बहुसांस्कृतिक विविधता की वैश्विक उपयोगिता का विश्लेषण करना।

4. परिकल्पनाएँ

1. वैश्वीकरण और पश्चिमीकरण जैसी प्रक्रियाओं से पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्य कमजोर पड़ रहे हैं, परंतु इनके सम्मिश्रण से नवीन सांस्कृतिक प्रतिमान भी विकसित हो रहे हैं।
2. शहरीकरण और उपभोक्तावाद से सामाजिक एवं सांस्कृतिक असमानताएँ बढ़ी हैं, लेकिन डिजिटल माध्यम सांस्कृतिक संरक्षण और प्रसार के नए अवसर गढ़ रहे हैं।
3. भारतीय सनातन संस्कृति की बहुलतावादी, समावेशी प्रकृति के कारण वर्तमान तनावों के बावजूद भविष्य में यदि जागरूकता और निष्पक्ष नीतियाँ सुनिश्चित हों तो सामाजिक सह-अस्तित्व संभव है।

5. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक सह विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। जिसमें अध्ययन के लिए मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों (जैसे पुस्तकों, शोध लेखों, रिपोर्टों एवं ऑनलाइन सामग्री आदि) का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः भारतीय संदर्भ तक सीमित है, अतः अंतरराष्ट्रीय तुलनात्मक विश्लेषण सीमित रूप में ही प्रस्तुत किया गया है।

विश्लेषण विधियाँ

- **अंतर्वस्तु विश्लेषण:** विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सामग्री को वर्गीकृत कर सांस्कृतिक चुनौतियों, संभावनाओं एवं मूल्यों के प्रमुख संकेतकों की पहचान की गई।
- **तुलनात्मक विश्लेषण:** जाति, वर्ग, धर्म, लिंग एवं क्षेत्रीय आधार पर सांस्कृतिक अनुभवों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।
- **सैद्धांतिक व्याख्या:** विभिन्न समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के माध्यम से निष्कर्षों को समझाया गया।

6. वर्तमान समय में भारतीय संस्कृति

भारतीय सनातन संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं बहुलतावादी संस्कृति रही है। जिसकी प्रमुख विशेषताएँ सहिष्णुता, विविधता में एकता, आध्यात्मिक परंपरा तथा परिवार केन्द्रित सामाजिक संरचना हैं। जिसमें विभिन्न धर्म, भाषाएँ और लोक परंपराएँ, सह-अस्तित्व में रहते हुए सांस्कृतिक समन्वय और समरसता को मजबूत करती हैं।

समकालीन संदर्भ में वैश्वीकरण, शहरीकरण और डिजिटल क्रांति ने भारतीय संस्कृति के स्वरूप को तेजी से प्रभावित किया है। उपभोक्तावादी जीवनशैली, अंतरराष्ट्रीय ब्रांड संस्कृति और बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रभाव विशेष रूप से नगरी क्षेत्रों में बढ़ा है। नगरीकरण एवं शहरी आबादी में वृद्धि ने पारंपरिक पारिवारिक संरचना और जीवनशैली में परिवर्तन लाया है। डिजिटल युग में इंटरनेट और सोशल मीडिया (जैसे यूट्यूब, फ़ेसबुक आदि) ने सांस्कृतिक एवं व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के नए माध्यम प्रदान किए हैं, जिससे लोक कलाएँ और परंपराएँ नई पीढ़ी तक अपनी पहुँच को सुनिश्चित किया है (फुच्स, 2014)। हालांकि, भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल पहुँच अभी भी एक चुनौती बनी हुई है।

वर्तमान समय में भारतीय संस्कृति की प्रमुख चुनौतियाँ

वर्तमान समय में भारतीय संस्कृति अनेक जटिल चुनौतियों का सामना कर रही है, जिनमें पश्चिमीकरण, शहरीकरण तथा बाजारवाद/उपभोक्तावाद प्रमुख हैं।

- पश्चिमीकरण और सांस्कृतिक क्षरण : वैश्वीकरण के प्रभाव से पश्चिमी जीवनशैली, व्यक्तिवादिता, भौतिकवाद और उपभोक्तावाद भारतीय समाज में तेजी से फैल रहे हैं, जिसके कारण युवा पीढ़ी पारंपरिक त्योहारों, भाषाओं और सामाजिक मूल्यों से दूर होती जा रही है। सोशल मीडिया, विदेशी ब्रांड्स और फिल्म संस्कृति आदि के व्यापक प्रभाव के कारण पारंपरिक भोजन की जगह फास्ट फूड, स्थानीय भाषाओं की जगह मिश्रित भाषा और लोक कलाओं का व्यावसायीकरण, परंपरागत सांस्कृतिक क्षरण को प्रदर्शित करता है (रिट्ज़र, 1993)। इसे सांस्कृतिक साम्राज्यवाद का उदाहरण माना जा सकता है।

- शहरीकरण और पारिवारिक विघटन : ग्रामीण आबादी का नगरों की तरफ पलायन जिसने परंपरागत भारतीय संयुक्त परिवार व्यवस्था को कमजोर कर दिया है परिणामस्वरूप एकल/नाभिकीय परिवारों का विस्तार हुआ है। साथ ही, पारिवारिक सहयोग, सामाजिक नियंत्रण तथा परिवार में वृद्धों की देखभाल में कमी आई है (देसाई, 1960)। विवाह संबंधों में परिवर्तन जैसे प्रेम विवाह, लिव-इन संबंध और तलाक की बढ़ती दरों ने पारिवारिक स्थिरता को प्रभावित किया है। इसके साथ ही महिलाओं की कार्यक्षेत्र में बढ़ती भागीदारी ने पारंपरिक भूमिकाओं को पूर्णतः चुनौती दी है।
- बाजारवाद और उपभोक्तावाद : वैश्विक बाजार अर्थव्यवस्था के प्रभाव से संस्कृति के तत्वों का अति उपभोक्तावादी व्यवहार त्योहारों को अब न केवल सांस्कृतिक अवसर के रूप में बल्कि वृहद व्यावसायिक गतिविधियों के रूप में बदल रहे हैं (राधाकृष्णन, 2020)। ब्रांडेड वस्तुओं का बढ़ता उपयोग, सामाजिक प्रतिष्ठा में उपभोक्ता व्यवहार की भूमिका, अत्यधिक खर्च और पर्यावरण की उपेक्षा पारंपरिक मूल्यों को कमजोर कर रहे हैं।
- जाति, धर्म, लिंग आधारित सामाजिक असमानता : भारतीय समाज में सामाजिक असमानता एक गंभीर चुनौती है, जो इसकी बहुलता और सहिष्णुतावादी प्रवृत्ति के विपरीत कार्य करती है। जाति आधारित विभाजन विशेषकर ग्रामीण समाज में दलित एवं आदिवासी समुदायों के साथ। भारत की धार्मिक विविधता जहाँ समृद्धि का प्रतीक है, वहीं राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण यह कभी-कभी तनाव और संघर्ष में बदल जाती है, परिणामस्वरूप सांस्कृतिक एकता के लिए बाधा बनती है (एनआईओएस, 2020)। शिक्षा के प्रसार के बावजूद दहेज प्रथा, लैंगिक भेदभाव और महिलाओं के सीमित अवसर उनकी सांस्कृतिक भागीदारी को प्रभावित करते हैं।
- डिजिटल विभाजन, फेक न्यूज़ और सांस्कृतिक विकृति : डिजिटल क्रांति ने जहां एक तरफ भारतीय संस्कृति के वैश्विक पहुच का रास्ता प्रशस्त किया है वहीं इसके साथ कई चुनौतियाँ भी उभर कर सामने आई हैं। जहां एक तरफ डिजिटलीकरण के कारण शहरी और शिक्षित वर्ग अत्यधिक लाभान्वित हुआ है वहीं ग्रामीण और निम्न आय वर्ग इससे पीछे रह जाता है। सोशल मीडिया पर फेक न्यूज़ और भ्रामक धार्मिक सामग्री के प्रसार से सामाजिक तनाव और भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है, जिसके परिणामस्वरूप सांस्कृतिक मूल्यों और विश्वास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः डिजिटल माध्यम एक ओर सांस्कृतिक विकास का साधन है, तो दूसरी ओर यह विकृति और विभाजन का कारण भी बन सकता है।

7. भारतीय संस्कृति की वर्तमान संभावनाएँ

- योग, आयुर्वेद और वैश्विक "सॉफ्ट पावर" : भारतीय संस्कृति की प्रमुख संभावनाएँ योग और आयुर्वेद के वैश्विक प्रसार से जुड़ी हैं। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) को 170 से अधिक देशों में मनाया जाना इस बात का प्रमाण है कि योग भारतीय सांस्कृति की आध्यात्मिक पहचान बन चुका है (ऑल्टर, 2004)। इसी प्रकार आयुर्वेदिक उत्पादों का वैश्विक बाजार तेज़ी से बढ़ रहा है। इससे भारतीय संस्कृति का प्राकृतिक संतुलित और समग्र स्वास्थ्य दृष्टिकोण विश्व स्तर पर स्वीकार किया जा रहा है (वोल्फार्ट, 2012)। इस प्रकार भारत "सॉफ्ट पावर" के रूप में उभर रहा है (नाए, 2004), जहाँ आर्थिक लाभ के साथ सांस्कृतिक प्रभाव भी बढ़ रहा है।
- डिजिटल माध्यमों द्वारा सांस्कृतिक पुनर्जागरण : डिजिटलीकरण के कारण यूट्यूब, फ़ेसबुक और OTT प्लेटफॉर्म जैसे अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर भजन, लोक संगीत, शास्त्रीय नृत्य, त्योहार और भाषाई विविधता व्यापक रूप से प्रस्तुत की जा रही है। परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार हेतु सकारात्मक अवसर मिल रहे हैं।
- नीतिगत एवं संस्थागत प्रयास : भारतीय संस्कृति के संरक्षण और विकास हेतु नीतिगत प्रयासों की कड़ी में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को शिक्षा में शामिल करना। जिससे वेद, उपनिषद, योग और आयुर्वेद और

सांस्कृतिक महोत्सवों जैसे विषयों को अकादमिक आधार मिल रहा है (भारत सरकार, 2020)। साथ ही विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों द्वारा आयोजित सेमिनार, वेबिनार और डिजिटल आर्काइव परियोजनाएँ भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

- युवा पीढ़ी की भूमिका और सांस्कृतिक नवीनीकरण : वर्तमान युवा पीढ़ी संस्कृति के संरक्षण और नवाचार की प्रमुख वाहक बनकर उभर रही है। सोशल मीडिया, ब्लॉग, पॉडकास्ट और डिजिटल कंटेंट के माध्यम से युवा लोक कला, भाषाओं और परंपराओं को आधुनिक शैली में 'हाइब्रिड संस्कृति' के रूप में समाज के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं (फुच्स, 2014)। कई युवा संगठन स्थानीय संस्कृति, लोक भाषाओं और आदिवासी परंपराओं के संरक्षण के लिए कार्य कर रहे हैं। जिससे भारतीय संस्कृति अधिक प्रासंगिक, गतिशील और वैश्विक स्तर पर प्रभावशाली बन रही है।

इस प्रकार योग, डिजिटल माध्यम, नीतिगत प्रयास और युवा भागीदारी भारतीय संस्कृति के भविष्य के लिए सशक्त संभावनाएँ प्रस्तुत करते हैं।

8. सैद्धांतिक विश्लेषण

- **प्रकार्यात्मक सिद्धांत :** संस्कृति को समाज की सामाजिक स्थिरता, मूल्य-व्यवस्था और सामाजिक नियन्त्रण का आधार होती है। भारतीय संस्कृति में सहिष्णुता, परिवार केन्द्रित जीवन और परंपरागत मूल्यों ने लंबे समय तक समाज को स्थिर बनाए रखा। किंतु वैश्वीकरण और बाजारवाद के प्रभाव से पारिवारिक विघटन, मूल्य संकट और व्यक्तिवाद बढ़ा है। इसके बावजूद नई सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ जैसे डिजिटल अभिव्यक्ति, योग और आयुर्वेद आदि संस्कृति के पुनर्गठन का संकेत देती हैं।
- **संघर्ष सिद्धांत :** धर्म, जाति और वर्ग आधारित विभाजन संस्कृति के भीतर गहराई से जुड़ा है। इस दृष्टि से भारतीय संस्कृति में जातिगत संरचना और धार्मिक साम्प्रदायिक राजनीति को वर्ग संघर्ष के रूप में व्याख्यायित किया गया है (बेतेइ, 1991)। अतः भारतीय संस्कृति की चुनौतियाँ केवल बाहरी प्रभावों से नहीं, बल्कि आंतरिक संरचनात्मक असमानताओं से भी जुड़ी हैं।
- **प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद :** व्यक्ति, समूह और संस्थानों के बीच होने वाली दैनिक अन्योन्यक्रियाएँ नए प्रतीकों और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को जन्म देती हैं। इस दृष्टि से सोशल-मीडिया पर वायरल रील्स, मीम्स, डिजिटल धार्मिक कंटेंट आदि नवीन सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से वर्तमान युवा पीढ़ी अपनी पहचान व्यक्त कर रही है। परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति निरंतर गतिशील एवं खुद को वर्तमान परिस्थितियों के योग्य पुनर्निर्मित करते हुए अपनी उपादेयता को सुनिश्चित करने हेतु निरंतर प्रयत्नशील है।
- **आधुनिकीकरण सिद्धांत :** ग्रामीण से शहरी, पारंपरिक से आधुनिक, जाति से वर्ग आधारित समाज की ओर बदलती संरचना को आधुनिकरण का प्रभाव माना जाता है। इसका प्रभाव धार्मिक विश्वासों, परिवार-संरचना और मूल्य-प्रणाली पर गहरा पड़ा है। योग और आयुर्वेद को अब वैज्ञानिक और स्वास्थ्यपरक दृष्टि से प्रस्तुत किया जा रहा है।

इन सभी सिद्धांतों से स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति न तो स्थिर है और न ही पूर्णतः परिवर्तित, बल्कि यह पुनर्गठन, संकरण और निरंतर विकास की प्रक्रिया में है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता का समन्वय दिखाई देता है।

समाजवैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर व्यावहारिक सुझाव

- **पाठ्यक्रम-सुधार:** भारतीय ज्ञान-प्रणाली (वेद, उपनिषद, भारतीय दर्शन, योग-आयुर्वेद, गणित, नैतिक विज्ञान आदि) को वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ जोड़कर पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए, ताकि युवा पीढ़ी में इसकी बेहतर समझ विकसित हो।
- **बहुसांस्कृतिक सामाजिक शिक्षण:** स्कूल स्तर पर बहुधर्मात्मकता, जाति संवेदनशीलता और लिंग समानता अथवा लैंगिक संवेदनशीलता विषयक संवाद कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ, ताकि डिजिटल साम्प्रदायिक विद्वेष की विपरीत दिशा में सांस्कृतिक संवाद बढ़ सके।

- **संस्कृति संरक्षण निधि:** सरकार और स्वतंत्र संस्थाएँ मिलकर लोक कला संरक्षण कोष और आदिवासी संस्कृति संरक्षण प्रोजेक्ट की स्थापना करें, जिससे खतरे में पड़ी लोक-कलाएँ और भाषाएँ बचाई जा सकें।
- **डिजिटल संरक्षण मानक:** डिजिटल संस्कार और अनुचित सांस्कृतिक विकृति से बचाव के लिए डिजिटल सांस्कृतिक नैतिकता दिशा निर्देश जारी किए जाएँ, जिससे विकृत धार्मिक सांस्कृतिक प्रतीकों के व्यावसायी उपयोग पर अंकुश लग सके।
- **स्थानीय-सांस्कृतिक संग्रहण:** विश्वविद्यालयों, नागरिक संस्थाएँ और युवा-ग्रुप द्वारा लोक कथा आर्काइव, भाषा का डिजिटल संरक्षण, और लोक नृत्य संग्रह के लिए स्थानीय स्तर पर प्रोजेक्ट शुरू किए जाएँ।
- **सांस्कृतिक-संवाद मंच:** विविध धर्म, जाति और लिंग आधारित समुदायों के बीच नागरिक संवाद कार्यक्रम (जैसे सामुदायिक योग शिविर, लोक संगीत एवं धार्मिक धर्म संवाद सत्र आदि) आयोजित किए जाएँ, ताकि साम्प्रदायिक विभाजन की विपरीत दिशा में सांस्कृतिक सह अस्तित्व को बढ़ावा मिल सके।

9. निष्कर्ष

वर्तमान समय में भारतीय संस्कृति अनेक आंतरिक एवं वाह्य चुनौतियों के मध्य परिवर्तनशील अवस्था में है। पश्चिमीकरण, शहरीकरण, बाजारवाद, जाति, धर्म, लिंग आधारित असमानताएँ तथा डिजिटल विकृति ने पारंपरिक मूल्यों और सामाजिक संरचना अत्यधिक प्रभावित किया है। विशेष रूप से पारिवारिक विघटन, उपभोक्तावाद और सांप्रदायिक तनावों ने सांस्कृतिक व्यवस्था और संतुलन को प्रभावित किया है। इसके बावजूद भारतीय संस्कृति की अंतर्निहित लचीलता और बहुलतावादी स्वरूप ने नई संभावनाओं को भी जन्म दिया है। योग और आयुर्वेद की वैश्विक स्वीकृति, डिजिटल माध्यमों द्वारा सांस्कृतिक पुनर्जागरण, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जैसे नीतिगत प्रयास तथा युवा पीढ़ी की सक्रिय भागीदारी ने इसे 'जीवंत और प्रासंगिक' बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

समाजवैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति का भविष्य न तो पूर्णतः पतन और न ही केवल पुनरुत्थान की ओर अग्रसर है, बल्कि यह एक शंकर, गतिशील और निरंतर पुनर्निर्माण की प्रक्रिया से गुजर रही है। वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण के बीच यह अपनी पारंपरिक जड़ों को बनाए रखते हुए नवीन सामाजिक, आर्थिक और डिजिटल संदर्भों में परिमार्जित हो रही है। अध्ययन की परिकल्पनाएँ भी इस तथ्य की पुष्टि करती हैं कि जहाँ वैश्वीकरण ने कुछ मूल्यों को कमजोर किया है, वहीं सांस्कृतिक सम्मिश्रण और डिजिटल माध्यमों ने नए अवसर भी प्रदान किए हैं। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि शिक्षा, नीतिगत समर्थन, डिजिटल जागरूकता और युवा सहभागिता को सुदृढ़ किया जाए, तो भारतीय संस्कृति भविष्य में एक सशक्त 'सॉफ्ट पावर' के रूप में उभरते हुए वैश्विक स्तर पर मानवीय और नैतिक मूल्यों को स्थापित कर सकती है।

References

[1]. शर्मा, आचार्य प. श्रीराम. (2018), *ऋग्वेद संहिता (भाग- 1)., यजुर्वेद संहिता, सामवेद संहिता, अथर्ववेद संहिता (भाग- 1, 2).* गायत्री तपोभूमि, मथुराः युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट.

[2]. अप्पादुरई, अर्जुन. (1996). *आधुनिकता बड़े पैमाने पर: वैश्वीकरण के सांस्कृतिक आयाम.* यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस.

[3]. ऑल्टर, जोसेफ एस. (2004). *योग इन मॉडर्न इंडिया: द बॉडी बिटवीन साइंस एंड फिलॉसफी.* प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.

[4]. बेतेइ, आंद्रे. (1991). *समाज और राजनीति: भारत में असमानता.* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

[5]. भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति *2020*. भारत सरकार.

[6]. कास्टेल्स, मैनुअल. (2010). *नेटवर्क समाज का उदय* (द्वितीय संस्करण). वाइली-ब्लैकवेल.

[7]. देसाई, ए. आर. (1960). *भारत में नगरीकरण.* पॉपुलर प्रकाशन.

[8]. दुर्खाइम, ई. (2001). *धार्मिक जीवन के प्रारंभिक रूप* (सी. कॉस्मैन, अनुवादक). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. (मूल प्रकाशन 1912)

[9]. गिडेन्स, ए. (1990). *आधुनिकता के परिणाम.* स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

[10]. मार्क्स, के., एवं एंगेल्स, एफ. (2002). *कम्युनिस्ट घोषणापत्र*. पेंगुइन क्लासिक्स. (मूल प्रकाशन 1848)

[11]. मर्टन, आर. के. (1968). सोशल थ्योरी एंड सोशल स्ट्रक्चर. फ्री प्रेस.

[12]. मुखर्जी, आर. के. (1940). द डायनेमिक्स ऑफ़ इंडियन सोसाइटी. मैकमिलन.

[13]. नाए, जोसेफ एस. (2004). सॉफ्ट पावर: विश्व राजनीति में सफलता के साधन. पब्लिकअफेयर्स.

[14]. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग (एनआईओएस). (2020). *समकालीन भारत में सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दे*. एनआईओएस.

[15]. फुच्स, क्रिश्चियन. (2014). *सोशल मीडिया: ए क्रिटिकल इंट्रोडक्शन*. सेज पब्लिकेशंस.

[16]. राधाकृष्णन, पी. (2020). *ग्लोबलाइजेशन एंड कल्चरल नेशनलिज्म इन इंडिया*. रूटलेज.

[17]. रिट्ज़र, जॉर्ज. (1993). द *मैकडॉनल्डीकरण ऑफ़ सोसाइटी*. पाइन फोर्ज प्रेस.

[18]. सईद, एडवर्ड. (1978). *ओरिएंटलिज़्म*. पैंथियन बुक्स.

[19]. शिलर, हर्बर्ट आई. (1976). *कम्युनिकेशन एंड कल्चरल डॉमिनेशन*. इंटरनेशनल आर्ट्स एंड साइंसेज़ प्रेस.

[20]. श्रीनिवास, एम. एन. (1966). *आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन*. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस.

[21]. सिंह, योगेंद्र. (1973). *भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण*. थॉमसन प्रेस.

[22]. टायलर, ई. बी. (2010). *प्रिमिटिव कल्चर*. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस. (मूल प्रकाशन 1871)

[23]. वोल्फार्ट, डोमिनिक. (2012). द आयुर्वेदिक सिस्टम ऑफ मेडिसिन: वैश्वीकरण और स्वास्थ्य नीति. रूटलेज.

Cite this Article:

डॉ. अनामिका सिंह, "समकालीन समाज में भारतीय संस्कृति की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ : एक समाजवैज्ञानिक विश्लेषण", *Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT), ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 4, pp. 12-18, April 2026. Journal URL: https://vijact.com*

***DOI:** https://doi.org/10.65785/vijact.v2i4.32*